

This PDF you are browsing now is a digitized copy of rare books and manuscripts from the Jnanayogi Dr. Shrikant Jichkar Knowledge Resource Center Library located in Kavikulaguru Kalidas Sanskrit University Ramtek, Maharashtra.

KKSU University (1997- Present) in Ramtek, Maharashtra is an institution dedicated to the advanced learning of Sanskrit. The University Collection is offered freely to the Community of Scholars with the intent to promote Sanskrit Learning.

Website https://kksu.co.in/

Digitization was executed by NMM

https://www.namami.gov.in/

Sincerely,

Prof. Shrinivasa Varkhedi Hon'ble Vice-Chancellor

Dr. Deepak Kapade Librarian

Digital Uploaded by eGangotri Digital Preservation Trust, New Delhi https://egangotri.wordpress.com/

भीगणेशायनमे वन्प्यत्त्रवर्वर्धिपार्यिन्द्रितारिवन्य सामानमाभीरविद्रितेरोणार्यस्य सम्भित्रेराणार्य व वस्य निवासादरनारिव समने देवन की यते के तक्ष्य विद्या स्वास्त्र के तिवासाद के तक्ष्य विद्या स्वास्त्र के तक्ष्य विद्या स्वास्त्र के तक्ष्य विद्या स्वास्त्र के तक्ष्य विद्या स्वास्त्र के तिवासाद के तक्ष्य के तिवासाद के तिवासाद के तिवासाद के तिवासाद के तिवास के तिव

रियायक्रमामान् अवतस्त्रादिश्वस्त्रात् अनगर्गात् अनगर्गात् अनगर्गत्वत्वार्गित्वावार्गत्वावार्गत्वात्रात्र्यात् वित्रायक्ष्यात्वात्र्य

नन् अञ्चल मानविधियाने नद्यां विधियान स्वानिध्यतियान स्विधियान कि विशिष्टां नातिविस्तरहे शब्दां र येथ प्रास्तातधान् असातिविस्त

शब् विषित्ति धानमा विभागतंत्र धर्मादिभिस्समस्ते साध शबान न सामानि यो नामाने पाना न त्र सम्भागते अनुसम्बत्ता साभ

क्रियां वत्रीत्रामित्यतिभिभागाद स्वामाञ्चियान स्वाम त्र भाष्य त्र आपप्राज्ञ यामन् च्यानात् त्र साम्य वन्त्र मन

क्षांसिक विद्यानी निष्यम्सा वनार नियं किया नियं मिला वर्गाना नियं कि वर्गाना न

मामाशाक न स्वत्यसम्बद्धा । विवन्यान न शानि परि सर्थ । परे प्रियमिक माने मिन ने माने मिन ने माने भिना निवायर मे

वियोगादति देतिबास्नमाता १ परमश्यासायात्मावेति मर्मातमा कार्यकार्णावित्नस्लानित्यश्र सम्मात्वा नेपर्नात्मातिष्ठिपयूपरेपववा

M922_

Accession Nov

1008,1008

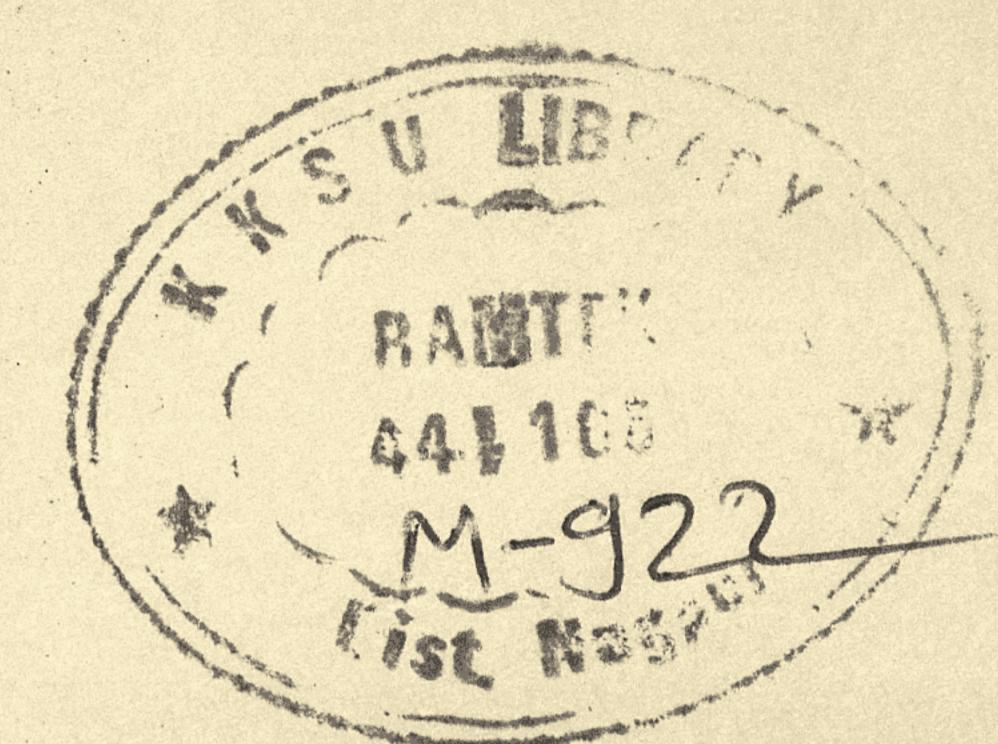
10085

Tithe 1) 241 (29)

2) Significa 1920A

3) 4/18/11/14/10/12/2

नात्मातिवेनतत्वन १ पर वाभावाता ज्ञार्श्वरणतामितिनवात्मने पद्म व्यक्तिमेद्राति विविधि रिष्ठिं तात्र विविधि रेश्यापे त्विधि थेर् त्यापे त्विभि थेर त्यापे त्विभागत्व । उ। उ। उ। उ। उ। त्यादि विविधि रेश विविधि रेश त्यापे त्यापे त्यापे त्यापे त्यापे त्यापे त्यापे विविधि रेश विधि रेश विध



Chocked 2019

93777A. 9337.78

13

प्रविष्णानित्वा स्वाप्ति स्व न्त्रवा प्रथम प्रविष्ठ विष्ठ व

संनाविधानमनाराम्भवादिवत्यस्भवादविधिधास्मानस्त्रीत्विधित्रानिने त्विति नास्माव्यक्ष्णविधियनावत्यवसंश्ववरापस्माव शास्त्र वास्मानस्त्र स्मायद्द्र सम्भित्र स्मायद्द्र सम्भित्र स्मायद्द्र सम्भित्र स्मित्र सम्भित्र सम्भित्य सम्भित्य

द्रसदिह्य प्राण्यान स्वतिसान निष्य क्षिण्या स्वति क्ष्य प्राप्य स्वति क्ष्य प्राप्य स्वति वर्ण परिण्या स्वति स्वति वर्ण परिण्या स्वति स्वति वर्ण परिण्या स्वति स्वति वर्ण परिण्या स्वति स

श्रीगाम• श्रीगा•्म8\

तत्र है साम लिया हो एस के स्वार्ण ने हैं से स्वार्ण ने हैं से स्वार्ण ने हैं से स्वार्ण के स्वर्ण के स्वार्ण के स्वार्ण के स्वार्ण के स्वर्ण के स्वार्ण के स्वर्ण के स्वार्ण के स्वर्ण के स्वर्

र्भ

वर्णसंभिक्तरम्य प्रमानिकान्य स्वार्थनिक व्यात्वामालमेदाना हर्णमा वर्णस्व स्वार्थने स्व

PARTITION OF BOTH BY





क्रावातिगातिभारिश्वणावकंग्रह आरेक्षेदित साहितिहात्रगर्णसामधान्य सम्बाद्ध ज्ञा अवारमाकारोळीएड शेचाद्व का अन्यस्य सिक्ष अन्यस्य स्थापित अन्यस्य स्थापित अन्यस्य सिक्ष सिक्य सिक्ष सिक्य सिक्ष सिक्य सिक्ष सिक्य सिक्ष सिक्ष सिक्ष सिक्य सिक्ष सिक्ष सिक्ष सिक्ष सिक्ष सिक्ष सिक

व्याग्य ।

जातिपराणिक्षा काए स्वरेद्रस्थरण न हते विषय है है उपिति उपयवर तर्बका कि संभविष्ठ व ग्रहण में तितित व या श्रास्त वाभावाधित है विषय व भाविष्ठ व प्रति के स्वर्ण के स्वर्

5

,CREATED=22.10.20 14:42
,TRANSFERRED=2020/10/22 at 14:43:40
,PAGES=5
,TYPE=STD
,NAME=S0004398
,Book Name=M-922-SARSWAT VYAKHYA
,ORDER_TEXT=
,[PAGELIST]
,FILE1=00000001.TIF
,FILE2=00000002.TIF
,FILE3=00000003.TIF
,FILE4=00000004.TIF
,FILE5=00000005.TIF

[OrderDescription]